E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मध्य प्रदेश में मानव बस्ती के सबसे शुरुआती प्रमाण: प्रागैतिहासिक काल का एक अवलोकन

Dr. Shalendra Kumar Goutam
NET, P.hd, Jiwaji University,
Gwalior, M.P

Paper Rcevied date

05/07/2025

Paper date Publishing Date

10/07/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.16645024

IMPACT FACTOR
5.924

Abstract

मध्य प्रदेश, अपने भौगोलिक केंद्र और विविध स्थलाकृति के कारण, भारतीय उपमहाद्वीप में मानव बसावट के सबसे पुराने और महत्वपूर्ण प्रमाणों में से एक रहा है। यहां के पुरातात्विक स्थल, विशेषकर नर्मदा घाटी और विंध्य पर्वतमाला में, पुरापाषाण काल से लेकर ताम्रपाषाण काल तक मानव उपस्थिति और सांस्कृतिक विकास के निरंतर साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यह शोधपत्र मध्य प्रदेश में मानव बस्ती के शुरुआती प्रमाणों की पड़ताल करता है, जिसमें विभिन्न प्रागैतिहासिक कालों के प्रमुख स्थलों, उनसे प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों और उनके महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

1. भूमिका :

मध्य प्रदेश भारत के हृदय में स्थित एक ऐसा राज्य है जिसका पुरातात्विक महत्व अद्वितीय है। इसकी भौगोलिक स्थिति – उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच एक सेतु का काम करना – तथा इसकी नदियाँ (नर्मदा, चंबल, बेतवा आदि) और पर्वतमालाएँ (विंध्य और सतपुड़ा) मानव जीवन के विकास के लिए आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती थीं। यही कारण है कि मध्य प्रदेश में मानव बस्ती के सबसे शुरुआती प्रमाण प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period) से मिलते हैं, जो लाखों वर्षों पहले के मानव इतिहास को समेटे हुए हैं। इन प्रमाणों में पत्थरों के औजार, गुफा चित्रकला, आवास स्थल और बाद के चरणों में कृषि व धातु कर्म के साक्ष्य शामिल हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. प्रागैतिहासिक काल का विभाजन और मध्य प्रदेश में उसके प्रमाण :

मध्य प्रदेश में मानव बस्ती के प्रमाणों को मुख्य रूप से तीन प्रागैतिहासिक चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

2.1. पुरापाषाण काल (Paleolithic Period) – लगभग 20 लाख वर्ष पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व तक

यह मानव अस्तित्व का सबसे लंबा चरण है, जो मुख्य रूप से पत्थरों के अपरिष्कृत औजारों के उपयोग और आखेटक-संग्राहक जीवन शैली की विशेषता है। मध्य प्रदेश इस काल के साक्ष्यों से समृद्ध है।

- नर्मदा घाटी: यह क्षेत्र पुरापाषाण काल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
  - हाथनौरा (सिहोर जिला): यहां से 1982 में पुरातत्वविद् अरुण सोनकिया द्वारा *होमो इरेक्टस* प्रजाति के मानव कपाल का जीवाश्म "नर्मदा मानव" (Narmada Man) खोजा गया था। यह भारत में मिला मानव जीवाश्म का एकमात्र ज्ञात प्रमाण है, जो इस बात का सूचक है कि इस क्षेत्र में लाखों वर्ष पहले आदिमानवों का निवास था। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के पाषाण उपकरण (हस्त-कुल्हाड़ी, क्लीवर, चापर) भी मिले हैं।
  - महेश्वर, मंडलेश्वर, नेमावर: नर्मदा नदी के किनारे ये स्थल निम्न और मध्य पुरापाषाण काल के औजारों के लिए जाने जाते हैं।
- भीमबेटका (रायसेन जिला): यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, भीमबेटका शैल आश्रय (Rock Shelters) पुरापाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक मानव अधिवास के निरंतर प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।
  - यहां से निम्न पुरापाषाण काल के बड़े फलक वाले औजार (जैसे हस्त-कुल्हाड़ी) और मध्य पुरापाषाण काल के छोटे और नुकीले औजार पाए गए हैं। ये औजार शिकार के लिए उपयोग किए जाते थे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- आदमगढ़ पहाड़ियाँ (होशंगाबाद जिला): यहां से मध्य पुरापाषाण काल के औजारों की बड़ी संख्या मिली है, जो मानव बस्ती की पुष्टि करती है।

2.2. मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period) – लगभग 10,000 ईसा पूर्व से 6,000 ईसा पूर्व तक

यह काल पुरापाषाण और नवपाषाण के बीच एक संक्रमणकालीन चरण था। इस काल में सूक्ष्म पाषाण औजारों (Microliths) का उपयोग बढ़ा और मानव जीवन शैली में कुछ बदलाव आए।

- भीमबेटका (रायसेन जिला): मध्यपाषाण काल के लिए भीमबेटका सबसे महत्वपूर्ण स्थल है।
  - यहां से बड़ी संख्या में सूक्ष्म पाषाण औजार (छोटे ब्लेड, त्रिकोण, समलम्ब) मिले हैं, जो तीर-कमान जैसे उपकरणों के साथ उपयोग किए जाते थे।
  - यहां की विश्व प्रसिद्ध शैल चित्रकला (Rock Paintings) भी मुख्य रूप से मध्यपाषाण काल से संबंधित है, जो उस समय के मानव की कलात्मक अभिव्यक्ति, दैनिक जीवन, शिकार दृश्यों और पशु-मानव संबंधों को दर्शाती है। ये चित्रकलाएँ मानव बस्ती के कलात्मक और सांस्कृतिक विकास का प्रमाण हैं।
- आदमगढ़ (होशंगाबाद जिला): भीमबेटका की तरह, आदमगढ़ से भी बड़ी संख्या में सूक्ष्म पाषाण औजार और शैल चित्र पाए गए हैं।
  - यहां से पशुओं के शुरुआती पालतूकरण (जैसे कुत्ता, गाय-बैल) के भी अप्रत्यक्ष प्रमाण मिले हैं, जो मानव बस्ती के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम था।
- अन्य स्थल: पचमढ़ी के पास जटाशंकर, सागर के पास एरण, मंदसौर के पास शैल आश्रय भी मध्यपाषाण काल के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

2.3. नवपाषाण काल (Neolithic Period) – लगभग 6,000 ईसा पूर्व से 2,000 ईसा पूर्व तक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

यह काल कृषि, पशुपालन, स्थायी बस्तियों और मृद्भांड निर्माण की शुरुआत के लिए जाना जाता है। मध्य प्रदेश में शुद्ध नवपाषाण स्थलों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, और अक्सर यह ताम्रपाषाण संस्कृति के साथ विलीन हो जाता है।

- कुछ पुरातात्विक खोजों से पता चला है कि मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में इस काल के अंत तक प्रारंभिक कृषि और स्थायी बस्तियों का विकास शुरू हो गया था।
- नर्मदा घाटी के कुछ क्षेत्रों में प्रारंभिक मिट्टी के बर्तनों के साक्ष्य मिले हैं जो नवपाषाण काल के अंतिम चरण या ताम्रपाषाण काल के प्रारंभिक चरण से संबंधित हो सकते हैं।

2.4. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period) – लगभग 2,300 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व तक

यह वह काल था जब मानव ने पत्थरों के औजारों के साथ-साथ तांबे का भी उपयोग करना शुरू कर दिया था। इस काल में स्थायी ग्राम बस्तियों का विकास हुआ, जो मध्य प्रदेश में विशेष रूप से समृद्ध रहे हैं।

- कायथा (उज्जैन जिला): यह मध्य प्रदेश की सबसे पुरानी ताम्रपाषाण संस्कृति (कायथा संस्कृति) का प्रतिनिधित्मक स्थल है, जिसका काल लगभग 2300-2000 ईसा पूर्व है।
    - यहां से सुनियोजित ग्रामीण बस्तियों, विशिष्ट गहरे लाल रंग के चित्रित मृद्भांड (Kayatha Ware), तांबे के उपकरण, मनके और हड़प्पा संस्कृति के साथ व्यापारिक संबंधों के प्रमाण मिले हैं।
- एरण (सागर जिला): बेतवा नदी के किनारे स्थित यह स्थल लगभग 2000-700 ईसा पूर्व की ताम्रपाषाण संस्कृति को दर्शाता है।
    - यहां से किलेबंदी वाली बस्तियों, विभिन्न प्रकार के मृद्भांड (मालवा वेयर, अहार वेयर), तांबे की वस्तुएं, मनके और कृषि गतिविधियों के साक्ष्य मिले हैं।
- नागदा (उज्जैन जिला): चंबल नदी के किनारे स्थित यह एक और महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण स्थल है, जो लगभग 1600-1300 ईसा पूर्व का है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- यहां से मिट्टी के घर, अनाज के गड्ढे, तांबे के उपकरण और विशिष्ट मालवा वेयर मृद्भांड मिले हैं।

- अन्य महत्वपूर्ण स्थल: महेश्वर (खरगोन), नवदाटोली (खरगोन), आवरा (मंदसौर) और दांगवाड़ा (उज्जैन) भी ताम्रपाषाणकालीन मानव बस्तियों के महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जहां से कृषि के अवशेष, विभिन्न प्रकार के मृद्भांड और धातु उपकरण मिले हैं।

3. प्रमुख स्थलों का महत्व

- भीमबेटका: यह स्थल केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर मानव उत्पत्ति और कलात्मक विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यहां एक ही स्थान पर पुरापाषाण से लेकर ऐतिहासिक काल तक की मानवीय गतिविधियों के निरंतर साक्ष्य एक अनूठा पुरातात्विक रिकॉर्ड प्रस्तुत करते हैं। वी.एस. वाकणकर का यहां का कार्य मील का पत्थर है।
- नर्मदा घाटी: नर्मदा मानव की खोज ने भारत में मानव विकासवादी अध्ययन को एक नई दिशा दी और इस क्षेत्र को वैश्विक पुरातात्विक मानचित्र पर स्थापित किया।
- ताम्रपाषाण स्थल: कायथा, एरण और नागदा जैसे स्थल मध्य भारत में ग्रामीण जीवन के उदय, प्रारंभिक कृषि समाज, धातु विज्ञान के विकास और व्यापारिक नेटवर्क की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

4. निष्कर्ष

मध्य प्रदेश में मानव बस्ती के सबसे शुरुआती प्रमाण निस्संदेह प्रागैतिहासिक काल से मिलते हैं। पुरापाषाण काल की नर्मदा घाटी में आदिमानव जीवाश्मों और भीमबेटका में सबसे पुराने पाषाण औजारों से लेकर मध्यपाषाण काल की शैल चित्रकला और सूक्ष्म पाषाण औजारों तक, तथा ताम्रपाषाण काल की सुनियोजित ग्रामीण बस्तियों तक, यह क्षेत्र मानव इतिहास के विभिन्न चरणों का एक जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। इन पुरातात्विक खोजों ने केवल मध्य प्रदेश के ही नहीं, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप में मानव सभ्यता के उद्भव और विकास को

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह प्रमाणित होता है कि मध्य प्रदेश आदिकाल से ही मानव बसावट और सांस्कृतिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

5. संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) की विभिन्न रिपोर्टें।
2. वाकणकर, वी.एस. (V.S. Wakankar) और ब्रुक्स, आर.आर.आर. (R.R.R. Brooks)। *स्टोन एज पेंटिंग्स इन इंडिया*।
3. सांकलिया, एच.डी. (H.D. Sankalia)। *प्रीहिस्टरी एंड प्रोटोहिस्टरी ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान*।
4. तिवारी, शिव कुमार। *मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं कला विरासत*।
5. एनसीईआरटी (NCERT) और अन्य प्रामाणिक भारतीय इतिहास की पाठ्यपुस्तकें।
6. विभिन्न पुरातात्विक जर्नलों और मोनोग्राफ्स में प्रकाशित शोध पत्र।